सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 18 • अंक 5 • 5 अगस्त 2021 • मूल्य : 20 रु.

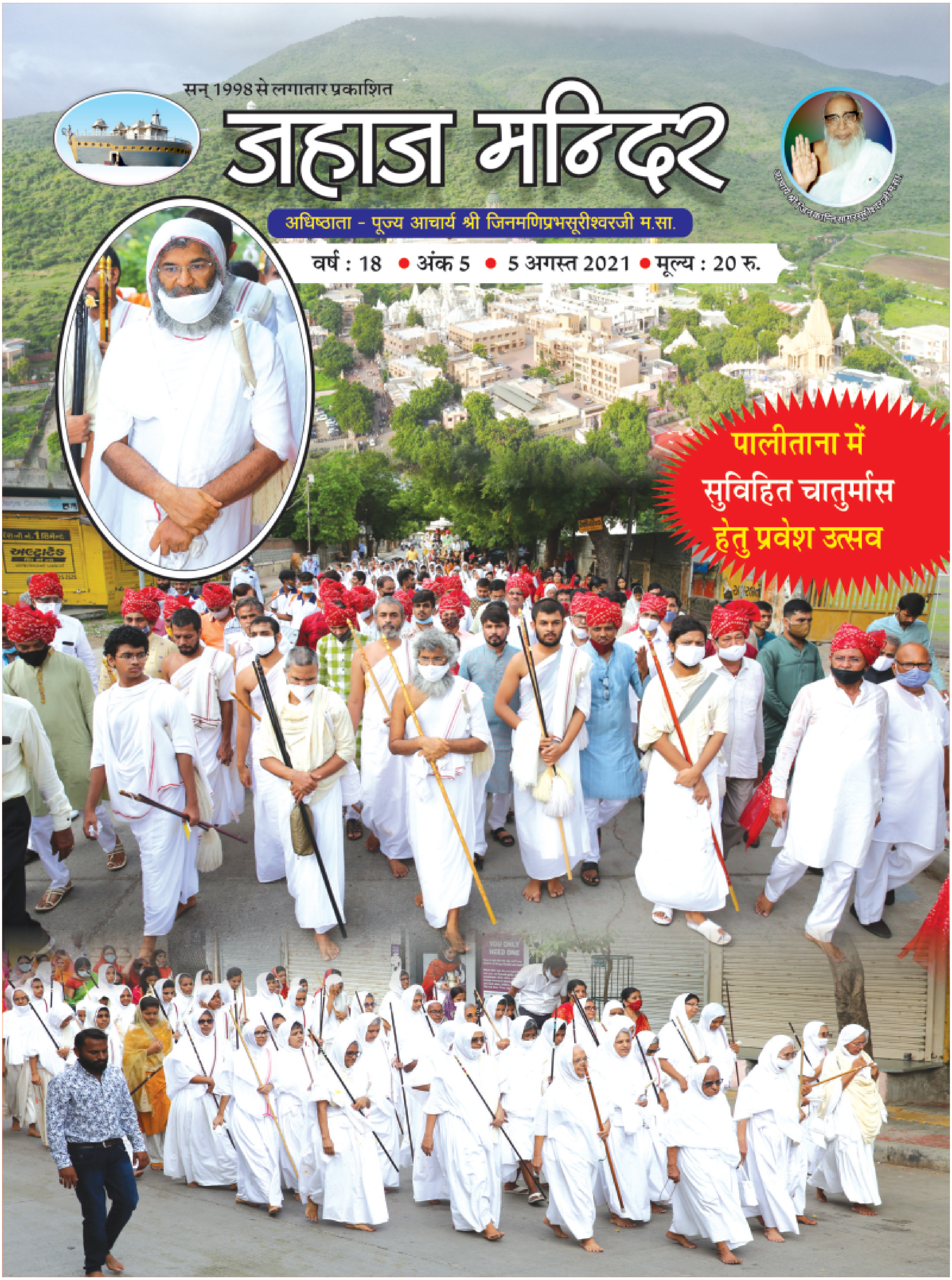

शा. कन्हैयालालजी रांका परिवार काम्बली ओढ़ाते हुए

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

जे पावकम्मेहि धणं मणुस्सा, समाययंती अमइं गहाय।
पहाय ते पास पयट्ठिए नरे, वेराणबद्धा नरगं उवेति।।

जो मनुष्य धन को अमृत समझ कर, पापकर्मों से उपार्जन करते है, उन्हें देखो। वे कर्म के फंदे में पड़ने के लिए तैयार है। वे वेर से बंधे हुए सारा धन यहीं छोड़कर नरक में जाते हैं।

Those people who accumulate wealth through sinful deeds, as if they were collecting nectar, get involved in great sins, create enmity with others, and eventually leaving all wealth here, go to hell.

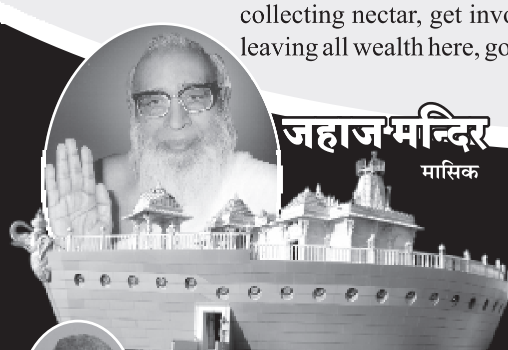

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 18 अंक : 5 5 अगस्त 2021 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :

डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि

ICICI की किसी भी शाखा में

SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST

BANK - ICICI JALORE

ACCOUNT NO. 065301000256

IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)

फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	विजयनगरम्	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	विशाखापट्टनम्	06
4. पिपाड़ा गोत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	07
5. विहार डायरी	आचार्य जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
6. चलो गिरनार	मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.	09
7. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य जिनमणिप्रभसूरिजी म.	10
8. जीव के कर्मबन्ध और मोक्ष का अनादित्व	आचार्य श्री मज्जिनहरिसागरसूरिजी म.	11
9. समाचार दर्शन	संकलित	20-29
10. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	30

विशेष दिवस

3 अगस्त रोहिणी

7 अगस्त पाक्षिक प्रतिक्रमण, पुष्य नक्षत्र प्रारंभ प्रात: 8.14

8 अगस्त ग्वालियर सागरताल दादाबाड़ी मेला, हरियाली अमावस, पुष्य नक्षत्र स.प्रा. 9.18

9 अगस्त पुष्य नक्षत्र समाप्त रात्रि 8.29

10 अगस्त श्री सुमतिनाथ च्यवन कल्याणक

12 अगस्त मासधर

13 अगस्त श्री नेमिनाथ जन्म कल्याणक

14 अगस्त श्री नेमिनाथ दीक्षा क., तप. श्रीछगनसागरजी म. पुण्यतिथि, लोहावट खरतरगच्छ दिवस

16 अगस्त श्री पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक, पू. श्री बुद्धिमुनिजी म.सा. पुण्यतिथि, पालीताणा

21 अगस्त पाक्षिक प्रतिक्रमण, पू. गणा. श्री त्रैलोक्यसागरजी म.सा. पुण्यतिथि, लोहावट

22 अगस्त श्री मुनिसुव्रतस्वामी च्यवन कल्याणक,

26 अगस्त अक्षयनिधि तप प्रारंभ

29 अगस्त श्री चन्द्रप्रभस्वामी मोक्ष कल्याणक, श्री शांतिनाथ च्यवन कल्याणक

30 अगस्त श्री सुपार्श्वनाथ च्यवन कल्याणक, पू. गणा. श्री हेमेन्द्रसागरजी पुण्यतिथि, सूरत.

31 अगस्त रोहिणी

विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407

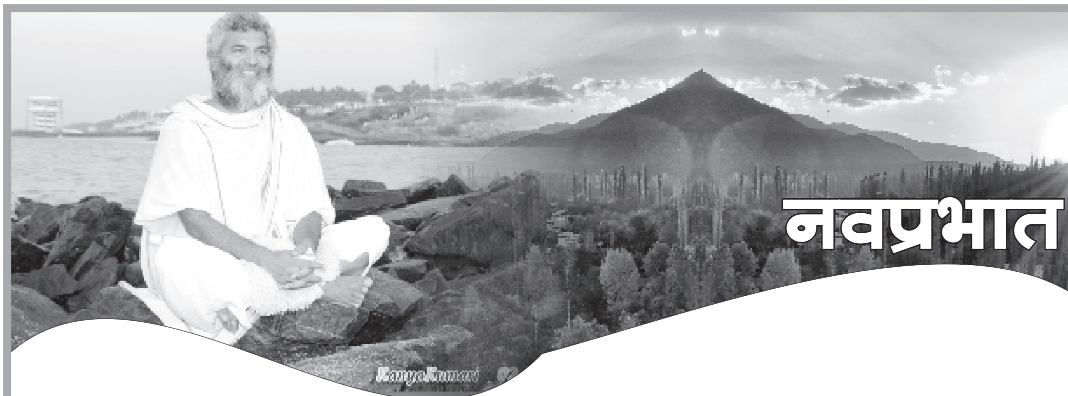

नवप्रभात

जीवन की सारी समस्याएें मन की देन है। क्योंकि उत्स वही है। समस्या का कारण अतृप्ति है। और मन कभी तृप्त नहीं होता। वह सदा अभाव खोजता है।

और यह तो निश्चित है कि पदार्थ के संदर्भ में 'जो है', उसकी अपेक्षा 'जो नहीं है', वह सदा-सदा कई गुणा होगा। जिसे अभाव में अभाव नजर आता है, वह कभी भी संतुष्ट नहीं हो सकता।

हकीकत में अभाव पीड़ा का नहीं, अपितु सुख का कारण है।

क्योंकि जिस वस्तु का अभाव है, उस वस्तु की उपस्थिति तुम्हारा समय खाती... तुम्हारी प्रतिभा खाती... तुम्हें तनाव देती।

उसके अभाव में वह समय व बुद्धि-वैभव बचा। उसके कारण होने वाले तनाव से बचे... तो यह प्रसन्नता का कारण है।

मन का कोरा होना जरूरी है। जैसे कागज गीला हो तो उस पर कुछ भी लिखा नहीं जा सकता। उसी प्रकार मन का कामनाओं के कारण पैदा हुआ गीलापन व्यक्ति को अभाव की ओर ले जाता है और फिर वह अशान्ति का निमित्त बनता है।

हृदय का भीगापन जरूरी है।

जैसे माटी का भीगापन उसे मनचाहा आकार देने में निमित्त बनता है।

जैसे भूमि जब भीगती है तब उर्वरा बनती है।

वैसे ही भीगे हृदय में ही प्रार्थना और शान्ति के फूल खिलते हैं...।

मन और हृदय के अन्तर को समझना है। मन को कोरा रखना है और हृदय को कोरा होने नहीं देना है।

कोरा मन और भीगा हृदय शान्ति का उत्स है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 20

विजयनगरम्

—मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
— साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

आंध्र प्रदेश के तटवर्ती शहर विशाखापट्टनम से 60 कि. मी. की दूरी पर बसा है- विजयनगरम्। तेलुगु भाषी क्षेत्र होने पर भी यहाँ जैनों की भी प्रधानता है। यहाँ मूर्तिपूजक 45, स्थानकवासी 22, तेरापंथी 62 घर होने के साथ-साथ दिगम्बरों के भी काफी गृहवास हैं। गच्छ का कोई भेद नहीं है तथा सकल संघ की एकता ने अपनी श्रद्धा और भक्ति के रूप में श्री संभवनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर का निर्माण करवाया है।

मंदिर के मूलनायक श्री संभवनाथ स्वामी की प्रतिमा की ऊँचाई 20 इंच एवं चौड़ाई 17 इंच है। दायें-बायें श्री पार्श्वनाथजी तथा श्री महावीरस्वामीजी की मूर्तियाँ शांत, सौम्य व अमृत रस बरसाती हुई श्रद्धालुओं को सहज ही आकृष्ट कर लेती हैं।

सं. 2015 से यहाँ घर मंदिर था। कालांतर में 2058 में शिखरबद्ध मंदिर की प्रतिष्ठा हुई, जिसमें दादा गुरुदेव के चरणों की भी पुनर्स्थापना हुई। दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरि के पूर्व में सीमेंट के पगले थे। उनके खंडित होने पर नई मार्बल पादुकायें प्रतिष्ठित की गईं। सफेद मार्बल की बनी इन पादुकाओं की लम्बाई 16 से.मी. तथा 11 से.मी. है। पक्षाल जल के निकलने हेतु मध्य में गौमुख बना हुआ है।

वि.सं. 2058 में चतुर्विध संघ की साक्षी में इस मंदिर की प्रतिष्ठा हुई। मात्र 12 फुट चौड़े परंतु लगभग 90 फुट लम्बे मंदिर में मूलनायक भगवान के बायीं दीवार में लगभग लम्बाई के मध्य में तिगड़ा रूपी गुरु मंदिर है। मध्य में श्री जिनदत्तसूरि चरण पादुका एवं पीछे दीवार में लगा कांच और स्वर्ण से निर्मित चित्र अत्यंत ही आकर्षक एवं शोभायमान है। इस मंदिर के अधिष्ठायक देवी-देवता के रूप में नाकोड़ा भैरव, पद्मावती देवी, मणिभद्र देव और चक्रेश्वरी देवी हैं जो चांदी के दरवाज़े युक्त गोखलों में प्रतिष्ठित हैं।

विजयनगरम् से 60 कि.मी. की दूरी पर अरकू हिल स्टेशन तथा ताटपुडी डैम 12 कि.मी. की दूरी पर दर्शनीय स्थल है।

पता :

श्री संभवनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर

चिन्ना विधि स्ट्रीट, विजयनगरम्-535 001 (आ.प्र.) दूरभाष : 08922-221620

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 21

विशाखापट्टनम्

आंध्र प्रदेश राज्य का एक प्रसिद्ध क्षेत्र है - विशाखापट्टनम। समुद्र के किनारे भवन-समूहों के मध्य स्थित है श्री सीमंधर स्वामी का समवसरण मंदिर। उसी के एक तरफ गगनचुम्बी इमारतों में दो मंज़िले भवन में दादावाड़ी का निर्माण किया गया है।

इस दादावाड़ी की वि. संवत् 1931 में शेठ श्री वाघमल जी गुलेच्छा के द्वारा स्थापना की गयी थी। वि. संवत् 2041 में तूफानी बाढ़ में दादावाड़ी क्षतिग्रस्त हो गयी। पुनः ईस्वी सन् 1986 में जीर्णोद्धार करवाया गया।

26 फीट गुणा 20 फीट के हॉल में कांचयुक्त लकड़ी के गंभारे में चांदी के तिगड़े पर प्रभु प्रतिष्ठित हैं। हॉल के पीछे एक दूसरा कक्ष बना हुआ है जिसमें संगमरमर की अष्टकोणीय छतरी बनी है जिसमें दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वर जी म.सा. के चरण प्रतिष्ठित हैं। इसके साथ श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी म.सा. के चरणों की भी स्थापना की गयी है। चरण श्वेत वर्ण वाले हैं। गोरे व काले भैरू की प्रतिमा भी स्थित है, परन्तु स्थायी रूप से प्रतिष्ठित नहीं हैं।

इस दादावाड़ी की विशेषता यह है कि दादा साहेब की चरण पादुकायें लगभग 140-150 वर्ष प्राचीन हैं। इन प्राचीन पवित्र चरणों से निकलती सकारात्मक ऊर्जा एवं दिव्य आशीर्वाद भक्तों के सारे विघ्नों को हर लेता है। प्रतिवर्ष ध्वजारोहण के दिन मिगसर सुदि 6 को पूजा आदि महोत्सव होता है।

इस नगर में मंदिरमार्गी परिवार 250 एवं कुल जैन परिवार लगभग 600 हैं। सभी की दादा गुरुदेव में भरपूर आस्था है। प्रति पूर्णिमा को दादा गुरुदेव की पूजा का सुन्दर कार्यक्रम होता है।

दादावाड़ी का संचालन श्री विशाखा जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के द्वारा किया जाता है।

पता :

श्री विशाखा जैन दादावाड़ी,

15-15-8/2, बुद्धवरपु गार्डेन, महारानी पेट, विशाखापट्टनम - 530 002 दूरभाष : 0891 - 2509236

पर्युषण पर्वों का सिरताज

3 सितंबर श्री पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व प्रारंभ, पुष्य नक्षत्र प्रारंभ दोपहर 04.41

4 सितंबर पुष्य नक्षत्र समाप्त सायं 05.44

6 सितंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण, मणिधारी दादा गुरुदेव श्री जिनचंद्रसूरि जी की 855वीं स्वर्ग जयन्ती, महरौली, नई दिल्ली, पू. श्री देवचन्द्र जी म.सा. पुण्यतिथि, अहमदाबाद

7 सितंबर भ. महावीर जन्म वांचन

8 सितंबर तेलाधर तपस्या प्रारंभ

10 सितंबर संवत्सरी महापर्व प्रतिक्रमण, मूल बारसा सूत्र वांचन (प्रथम प्रहर में)

पीपाड़ा गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

पीपाडा गोत्र के इतिहास के सूत्र पीपाड नगर से मिलते हैं। इस नगर पर गेलोत राजपूत राजा राज्य करते थे। यह घटना वि. सं. 1072 की है। उस समय पीपाड नगर पर राजा करमचंद/ कर्मसिंह का राज्य था। न्याय नीति से राज्य चल रहा था।

उस समय चंद्र गच्छ के आचार्य प्रवर श्री वर्धमानसूरि आचार्य जिनेश्वरसूरि विचरण करते हुए पीपाड पधारे। ये वही जिनेश्वरसूरि हैं, जिन्होंने अपने गुरुदेव की आज्ञा से वि.सं. 1075 में पाटण नगर में चैत्यवासियों के साथ राजा दुर्लभराज की साक्षी में पंचासरा पार्श्वनाथ मंदिर में शास्त्रार्थ किया था। और उस शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करने पर दुर्लभराज ने 'खरतर' बिरुद प्रदान किया था। तब से चंद्र गच्छ का ही दूसरा नाम खरतरगच्छ हुआ।

आचार्य वर्धमानसूरि द्वारा बरसायी गयी जिनवाणी में नगरजनों के साथ-साथ राजा करमचंद भी नहा गया। परिणाम स्वरूप वह प्रतिदिन प्रवचनों में और चर्चाओं में आने लगा। आचार्यश्री की तेजस्विता ने जितना प्रभावित किया, उससे कई गुणा वह जिनवाणी के अद्‌भुत सिद्धान्तों से प्रभावित हुआ।

उसने एक दिन पूज्य आचार्यश्री के समक्ष जैन धर्म स्वीकार करने के अपने निर्णय को प्रकट किया। निवेदन किया कि मुझे जैन धर्म में दीक्षित करें। मैं साधु बन नहीं सकता। उतना पराक्रम नहीं है। पर मैं सच्चा श्रावक बनना चाहता हूँ।

आचार्यश्री ने उन पर वासक्षेप डालकर विधि विधान पूर्वक उसे जैन धर्म की श्रावक-दीक्षा प्रदान की। चूंकि वे राजा पीपाड के थे, अत: उन्हें पीपाडा गोत्र प्रदान किया। उनकी वंश परम्परा पीपाडा कहलायी।

नवनिर्मित तीर्थों व दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिये

श्री विक्रमपुर (राज.) द्वितीय दादा गुरूदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (हाल में बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शन पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के अलग उपाश्रय तथा अतिथिगृह जिसमें एअरकंडीशनर व फर्नीचरयुक्त कमरे, डोरमेट्री की सुविधा प्राप्त है तथा यह फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर, फलोदी, बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Administrotor
Shri Dharmendra Khajanchi
Bikaner (Raj.) Mo.: 9413211739

मुनीम श्री प्रशान्त शर्मा, श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305 (जि. बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635, 9001426345-पेढ़ी

श्री खेतासर (राज.)

चतुर्थ दादागुरूदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्म स्थली खेतासर में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय तथा चतुर्थ गुरूदेव की दादाबाड़ी के दर्शन-वंदन व पूजन का लाभ प्राप्त होगा। यहाँ पर साधु-साध्वी भगवंतों के उपाश्रय तथा अतिथिगृह फर्निचरयुक्त कमरे की सुविधा प्राप्त है। यहाँ भोजनशाला की सुविधा है मगर हर रोज भोजनशाला चालू नहीं है। यहाँ पधारने के लिये जोधपुर, ओसिया, तिंवरी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान ओसियां तीर्थ से 10 किमी. तथा जोधपुर से 65 किमी. पर हैं।

Administrotor श्री बाबूलालजी टाटिया
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 9928217531

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
खेतासर (ओसियां-राज.) मो. 74250062227

श्री सिद्धपुर पाटन (गुज.)

खरतरगच्छ की जन्मस्थली पाटन नगर में सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में भवन का निर्माण किया गया है। यहां पर साधु-साध्वी भगवतों के रूकने, स्वाध्याय व पठन-पाठन के लिए सुविधायुक्त भवन है। कृपया जब भी साधु-साध्वी भगवंत पाटन पधारे तो इस सुविधा का उपयोग जरूर करें।

श्री जिनदत्तकुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी, पाटन (गुज.)

Ex. Trustee: **Shri Deepchandji Bafna**
Ahmedabad (Guj.) Mo. 9825006235

श्री राकेश भाई मो. 9824724027

विहार डायरी

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

सिलवासा से एम्ब्युलेंस द्वारा मुंबई जाना पड़ा। मेरे साथ मुनि मनितप्रभ आदि दो मुनि और थे। मुनि मुक्तिप्रभ, मनीषप्रभ, मयंकप्रभ, मेहुलप्रभ पीछे रहे थे। मुकेश साथ था। मुंबई में डॉ. श्री एम. एम. बेंगानी को सारी रिपोर्ट भेजी जा चुकी थी। उन्हीं की सलाह अनुसार मुंबई का प्रवास किया गया था।

मुझे ले जाने के लिये श्री भंवरलालजी छाजेड, श्री पुखराजजी छाजेड व श्री बाबुलालजी छाजेड आये थे। दीक्षा के बाद पहली बार वाहन का उपयोग हो रहा था। मन की बैचेनी स्वाभाविक थी।

वयोवृद्धा साध्वी श्री प्रकाशश्रीजी म. पूजनीया माताजी म. बहिन म. आदि सबका विहार मुंबई की ओर साथ ही हो रहा था।

मुझे वह क्षण आज भी याद है। जब मैं उदास चेहरे के साथ गाडी में बैठा था। विदा कर रहा था मुनिगण व साध्वीगण! साधु साध्वी सबकी आंखों से आंसू बह रहे थे। उन्हें लग रहा था कि कोई गंभीर बीमारी न हो। उनकी आंखों में भरे आंसुओं पर जब मेरी निगाहें गई तो बहुत देर से दबे हुए आंसू आंखों से छलक पडे।

सबका मन मेरी स्वस्थता के लिये प्रार्थना कर रहा था। डॉक्टर साहब ने कहा था– हार्ट के ऊपर, फेफडों पर रसी की एक गांठ हो गई है। उसका फूटना खतरनाक हो सकता है। इस कारण मुंबई जाकर इसके इलाज कराने के निर्णय में अतिशीघ्रता की गई थी। गंभीर बीमारी की आशंका का कारण भी था। चूंकि गांठ है तो कदाच गांठ केंसर की भी हो सकती है। इस संभावना के कारण सभी साधु साध्वीजी म. भयभीत थे। गुरुदेव से उनकी प्रार्थना तपस्या के साथ उसी दिन से प्रारंभ हो गई थी।

कोसवाड, डहाणुं, बोरडी आदि क्षेत्रों में विहार करने की हमारी भावना मन में ही रह गई। इन क्षेत्रों के श्रावकों का दो दिन पहले ही आना हुआ था और खूब विनंती की थी। पूर्व में यह संपूर्ण क्षेत्र खरतरगच्छ मान्यता का था। वर्तमान में विचरण के अभाव में परिवर्तन दिखाई देता है। प्रायः सभी जगह दादावाडियाँ है।

पूजनीया माताजी म. के आशीर्वाद और सभी की मंगलकामनाओं के साथ मुंबई हेतु प्रवास प्रारंभ हुआ। गाडी का वह प्रवास मैं भूल नहीं सकता। लोग गाडियों में कैसे सफर करते होंगे, मेरे लिये यह अचरज का विषय है। गाडी के प्रवास को आधा घंटा ही बीता था कि चक्कर आने प्रारंभ हो गये। उल्टियाँ शुरु हो गई। उल्टियों व चक्कर का क्रम लगातार अस्पताल पहुँचने तक चला।

मुंबई में मुझे बोम्बे हास्पिटल में भर्ती कराया गया। मुंबई का खरतरगच्छ संघ तत्पर था। लगभग छह से सात दिन मुझे अस्पताल में रहना पडा।

बहुत सारी टेस्टिंग हुई। रिपोर्ट अनेक डॉक्टर्स को दिखाई गई। कई डॉक्टर ऑपरेशन से सहमत नहीं थे। इस हेतु डॉ. बेंगानीजी ने प्रयत्न भी किया।

जहाँ गांठ थी, वहाँ सीधे इंजेक्शन लगाकर रस्सी को बाहर निकालने का प्रयास किया। उस इंजेक्शन को याद करता हूँ तो आज भी मन दर्द से कराह उठता है। बहुत मोटी सुई वाला स्पेशल इंजेक्शन था। पर यह प्रयोग सफल नहीं

हुआ। आखिर दूसरे दिन ता. 25 जून 2003 को ऑपरेशन संपन्न हुआ। डॉ. बेंगानीजी ने किया।

ऑपरेशन थियेटर में मशीनें लगाने के बाद मुझे एनेस्थेसिया दिया गया। बेहोशी में ऑपरेशन हुआ। गांठ को टेस्टिंग के लिये भेजा गया। टेस्टिंग की रिपोर्ट आई कि केन्सर नहीं है। सभी ने संतोष व आनंद का अनुभव किया।

अस्पताल के इन सात दिनों में संघ के आगेवान श्रावकों की सेवाऐं बहुत अनुमोदनीय थी। पर विशेष रूप से श्री मंगलप्रभातजी लोढा का प्रेम, उनकी तत्परता, उनकी वैयावच्च को मैं कभी भूल नहीं सकता।

व्यस्त राजनेता होने पर भी पूरा समय देना, तत्परता के साथ हर कार्य करना, उनकी विशिष्टता थी। उधर हमारा मुनि वर्ग व साध्वीजी म. अति उग्र विहार कर रहे थे। प्रतिदिन 30 से 35 कि.मी. का विहार हो रहा था।

शल्य चिकित्सा के दो दिन बाद ता. 27 जून 2003 को अस्पताल से मुझे छुट्टी मिली। अस्पताल से विहार कर श्री महावीर स्वामी मंदिर पायधुनी पहुँचे। हमारे मुनि व साध्वीजी म. भी विहार कर दूसरे ही दिन श्री महावीर स्वामी मंदिर पधार गये थे।

चातुर्मास हेतु प्रवेश ता. 13 जुलाई को था। इस बीच 6 जुलाई 2003 को दादा गुरुदेव के चरणों की प्रतिष्ठा लालबाग मोतीशा मंदिर में संपन्न हुई।

इन चरणों का अपना एक इतिहास है। (क्रमशः)

गीत गाता चल 6

चलो गिरनारे सभी...

रचयिता– मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.

तर्जः (तोसे नैना जब से मिले)

महिमा तेरी कैसे गाऊँ माँ, भक्ति करूँ मैं दिल से तेरी माँ
शक्ति दे, शक्ति दे, शक्ति दे, मुझको मैया भक्ति की शक्ति दे...
नेमि नेमि नेमि... नेमि नेमि नेमि नेमि...
चलो गिरनारे सभी मिलकर चले-चले नेमि के दरबार में...
नेमि है मेरी सांसों में धडकन में, भवानी हरे कष्टों को एक पल में
रहूँ मैं मेरे नेमि के चरणों में... नेमि रे...।।टेर।।
मास अधिक उपवास किए तब इन्द्रराज की स्वर्ण गुफा में ले गई
रत्नसार ने माता तुमसे पाई प्रतिमा श्याम वर्ण वो नेम की
नाम तेरा..., भक्ति तेरी..., मैं भी करूँ... चलो गिरनारे।।1।।
मंत्री उदायन, पुत्र वाहडा, मार्ग बनाया तेरे पुण्य साथ से
संघवी वस्तु तेजपाल के, पैदल संघ की रक्षा की थी आपने
वो अम्बाजी, उन्होंने किया, तेरी भक्ति में... चलो गिरनारे।।2।।
धन अरु सूरि बप्पभट्ट को, दिग्वसनों से विजय दिलाई आपने
श्रद्धा देखकर, आम भूप की, दो नाक की प्रतिमा दी गिरनार से
प्रसिद्ध है वो, खंभात में, 'कान्ति-मणि' 'नेमि'... चलो गिरनारे ।।3।।

QR Code

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

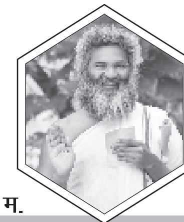

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

गुरुदेवश्री जब कुलपाकजी बिराज रहे थे, उस समय श्री जिनदत्तसूरि सेवा संघ के महामंत्री श्री प्रतापमलजी सेठिया अन्य सहयोगी कार्यकर्ताओं के साथ पधारे थे। पूज्यश्री से निवेदन किया था कि पालीताना में श्री जिनदत्तसूरि सेवा संघ का दूसरा अधिवेशन होना है, साथ ही खरतरगच्छ का साधु सम्मेलन भी आयोजित करना है। अतः आपश्री पालीताना की ओर विहार करावें।

मई 1960 में यह अधिवेशन होना था। इस हेतु श्रमण-श्रमणी वर्ग बडी संख्या में पालीताना पहुँचा था। पू. गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय के पू. आचार्य वीरपुत्र श्री जिनआनंदसागरसूरिजी म., पू. उपाध्याय श्री कवीन्द्रसागरजी म., पू. गणिवर श्री हेमेन्द्रसागरजी म., पू. गुरुदेवश्री आदि साधुगण पधार गये थे।

पू. मोहनलालजी म. के समुदाय के पू. गणिवर श्री बुद्धिमुनिजी म., पू. गुलाबमुनिजी म. आदि ठाणा, पू. आचार्य श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि समुदाय के पू. उपाध्याय श्री सुखसागरजी म., पू. मंगलसागरजी म. आदि ठाणा पधार गये थे। इस प्रकार तीनों समुदायों के श्रमण वर्ग का पदार्पण हो गया था।

साध्वी वर्ग भी बडी संख्या में उपस्थित था।

ता. 14 मई 1960 को अधिवेशन प्रारंभ हुआ था। खुले अधिवेशन में श्रावक वर्ग बडी संख्या में पूरे भारत से पहुँचा था। पालीताना दरबार श्री बहादुरसिंहजी का पधारना हुआ था। साथ ही मुंबई के सुप्रसिद्ध श्रावक श्री जीवतलाल प्रतापसी भाई भी विशेष अतिथि के रूप में पधारे थे। सेवा संघ के अध्यक्ष जयपुर के श्री महताबचंदजी गोलेच्छा थे।

ता. 15 मई 1960 को पूज्य गुरुदेवश्री का प्रभावशाली वक्तव्य हुआ था। इस अधिवेशन व

२६ अधिवेशनाङ्क १ जून १९६०

चतुर्थ बैठक

वक्तव्य का पूरा विवरण 'श्वेताम्बर जैन' के 1 जून 1960 के वर्ष 14 अंक 3-4 के अंक में प्रकाशित हुआ है। यह अंक अधिवेशन विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ था।

इस अधिवेशन के साथ खरतरगच्छ के तीनों समुदायों का सम्मिलित सम्मेलन संपन्न हुआ था। इस सम्मेलन में सामूहिक रूप से क्या निर्णय किये गये, इसका ब्यौरा अन्वेषणीय है।

परन्तु इस अधिवेशन के बाद खरतरगच्छ का जो पंचांग प्रकाशित हुआ, उसके अनुसार यह स्पष्ट है कि पूर्व में जोधपुर के निर्णयसागर पंचांग को खरतरगच्छ संघ मान्यता देता था, उस अधिवेशन में जन्मभूमि पंचांग को मान्यता देने का निर्णय किया गया। बाद में दो वर्षों तक जन्मभूमि के अनुसार ही पंचांग का प्रकाशन होता रहा। बाद में पुनः निर्णयसागर का निर्णय हुआ।

तत्त्वचर्चा

जीव के कर्मबन्ध और मोक्ष का अनादित्व

पू.आ. श्रीमज्जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.

[तेरापंथी युवक संघ-लाडनूं-की पत्रिका में श्री सोहनलालजी वैध लाडनूं का 'जैनधर्म प्रतिपादित जीव के कर्मबन्ध तथा मोक्ष के अनादित्व पर एक आलोचनात्मक दृष्टि' शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ था। लेख में आलोचना करते समय लेखक वादी, प्रतिवादी और न्यायाधीश स्वयं बनकर जैन मान्यता के विरोध में फैसला देता है। उसी को लक्ष्य में रखकर ही यह लेख लिखा गया है।]

-सोहनलालजी के मुख्य मुद्दे

१. जीव छोटा-बड़ा क्षेत्र घेरता है अत: वह रबर के फीते की मिसाल बन जाता है। जो पदार्थ सिकुड़ता फैलता है, वह संयोगी ही होता है, एक और अखंड नहीं हो सकता। इससे जीव की परिभाषा टूटती है। अत: जीव को छोटे से छोटा मानना चाहिए।

२. संयोग कभी अनादि नहीं होता। जीव पुद्गल जब भिन्न २ द्रव्य है, तो संयोग से पूर्व कभी अपने असली रूप में रहने ही चाहिए। अनादि संयोग कभी टूट नहीं सकता।

३. सारे मुक्त जीवों की आदि है, तो क्या उन सबके पहले मुक्तिमार्ग ही नहीं था ? अगर कितनेक मुक्तों की आदि भी नहीं, अंत भी नहीं तो जब वे मुक्त हुए, तब क्या कोई तिथि मिती नहीं थी ? कहा जाय कि थी, तब अनादित्व कैसा ? कहोगे तिथि मिती तो थी, पर हमें इसका पता नहीं तो अनादित्व की केवल मौखिक प्रतिज्ञा ही होगी।

४. मुक्त होने से पहिले सांसारिक अवस्था का होना अनिवार्य है। तो मुक्त होने की तिथि भी अवश्य ही होनी चाहिए।

५. बंध को अनादि कहा जाता है। बंध टूटे बिना मुक्ति नहीं होती। इस हालत में बंध अनादि माना जाय, या मुक्ति !

६. अनादि को अंतवाला मानना, और सादि को अनंततावाला मानना यह एक सैद्धान्तिक भूल है।

७. जिस द्रव्य का प्रागभाव है उसका प्रध्वंसाभाव भी अनिवार्य है। जो बना है, वह बिगड़ेगा। आया है, वह जायगा। जो बना नहीं, वह बिगड़ेगा भी नहीं। जो आया नहीं वह जायगा भी नहीं। जिसकी आदि है, उसका अंत है। जिसकी आदि नहीं उसका अंत भी नहीं।

८. इसलिए समस्त मुक्त जीवों की मुक्त होने की अपेक्षा से आदि है। कोई भी मुक्त जीव मुक्तापेक्षया अनादि नहीं माना जा सकता।

विश्लेषण परीक्षण और प्रयोग

सोहनलालजी ने अपने लेख में प्रयत्न जरूर किया है, पर वे सफल नहीं हुए। क्योंकि जैन दर्शन के मूल सिद्धान्त उन्होंने ठीक नहीं समझे।

१. जीव अपने रूप में असंख्य प्रदेशात्मक एक और अखंड रूप होता हुआ भी संयोगी होने से छोटे बड़े क्षेत्र में व्याप्त हो, रहता है। उस पर रबर के फीते की मिसाल लागु नहीं होती, क्योंकि रबड़ टूटता है, अणु परमाणु रूप में बिखर भी जाता है। जीव ऐसे न टूटता है न बिखरता ही है। कर्म के संयोग से उसमें उस ढंग की व्याप्ति पैदा होती है, जिससे कि वह छोटे बड़े क्षेत्र को घेरता है।

२. संयोग प्रवाह रूप से अनादि हो सकता है। जीव पुद्गल भिन्न २ द्रव्य है और असंकीर्ण भाव से दोनों का संयोग होता है। संयोग की हालत में भी उनका असली रूप मिटता नहीं। प्रवाह रूप से अनादि संयोग कारणपरक होने से कारणों के अभाव में टूट भी जाता है।

३. सारे मुक्त जीवों की मुक्ति होने की अपेक्षा से आदि है, पर काल की विचारणा में वह आदि काल अनादि अनंत होने से अनादि अनंतता से आक्रान्त हो जाती है। काल के अनादित्व को केवल मौखिक प्रतिज्ञा नहीं है। अनादि अनंतत्व की विचारणा कालद्रव्य को लक्ष्य में रखकर ही यहां की गई है।

४. मुक्त होने की तिथि अवश्य होती है, पर वह काल के अनादि अनंतत्व से आक्रांत है।

५. बंध और मुक्ति दोनों प्रवाहरूप से अनादि काल से चल रहे हैं, और अनन्त काल तक चलते रहेंगे। अनादि अनंत की प्रतिज्ञा व्यक्तिगत नहीं प्रवाह रूप से की गई है।

६. अवस्था की अपेक्षा से अनादि अंतवाला होता है और आदि अनंततावाला होता है। यह सैद्धान्तिक भूल नहीं, समझ की भूल है।

जैन दर्शन में किसी भी सद्भूत द्रव्य का प्रागभाव वा प्रध्वंसाभाव होता ही नहीं। हाँ सद्भूत द्रव्य के पर्यायों का प्रागभाव प्रध्वंसाभाव होता ही है। संसारी और मुक्त यह जीव की दो मोटी अवस्थाएं हैं। इनमें दोनों क्या चारों ही अभाव अपेक्षा से घटित होते हैं।

८. समस्त मुक्त जीवों की मुक्त होने की अपेक्षा में आदि है जरूर, पर कालापेक्षया इस आदि की आदि नहीं है इसलिए जैन दर्शनशास्त्री मुक्ति के प्रवाह को अनादि कहते हैं। इन्हीं आठ मुद्दों को अधिक स्पष्टता से समझना है।

जीव, अजीव और उनका लक्षण

जीव और अजीव- इन दोनों प्रकार के द्रव्यों का संयोग-वियोग हो उसे संसार नाम से पुकारा जाता है। संयोग-वियोग भी सकारण ही होता है। जब तक कर्त्ता तत्प्रकार के कारणों का उपयोग करता रहेगा तब तक संयोग-वियोग रूप कार्य बनते ही रहेंगे। और कारणों का उपयोग बन्द होने पर कार्य अपने आप बंद हो जायेंगे। न रहेगा बाँस न बजेगी बांसुरी। उस अवस्था को मोक्ष के नाम से पुकारा जाता है।

जीव साधारण रूप से चेतनावाला, कर्म को करने वाला, कर्मफलों को भोगनेवाला, और कर्मों का अंत करनेवाला होता है। जीव संख्या की दृष्टि से अनंत व प्रतिशरीर भिन्न-भिन्न होते हैं। कर्मसंबद्ध जीव अनादि काल से रूपी बना हुआ है। यदि कर्ममुक्त हो जाय तो वही अरूपी हो जाता है। कर्मों के बन्ध और मोक्ष में जीव को अनुकूल और प्रतिकूल १-काल, २ स्वभाव, ३ नियति, ४ पूर्वकृत कर्म व ५ पुरुषार्थ ये पांच निमित्त कारण साधक और बाधक हुआ करते हैं।

अजीव असाधारण रूप से अचेतन होता है। अजीव रूपी अरूपी दोनों प्रकार का होता है। अजीवद्रव्य के १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ पुद्गलास्तिकाय व ५ काल ये पांच मुख्य भेद हैं। जीव को बन्धनकर्ता कर्म पुद्गल द्रव्य की रचना है।

जीव और कर्म

इन दोनों का संयोग-संबंध अनादि काल से प्रवाह रूपमें चला आ रहा है। इस प्रवाह का मूल कारण जीव का अपना अज्ञान-मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग ही माने गये हैं। इन मूल कारणों के एकान्तिक रूप से मिट जाने पर, जीव का कर्मों के क्लेशों से छुटकारा हो जाता है; उसी को मोक्ष कहते हैं। मोक्ष होने पर कर्मबन्धन के योग्य कारणों का आत्यन्तिक अभाव होने से मुक्त जीव संसार में वापस नहीं आता।

संयोग और वियोग

यह १ अनादि अनंत, २ अनादि सांत, ३ सादि अनंत, ४ सादि सांत, ऐसे चार प्रकार से होता है। इन चारों प्रकारों को समझाने के लिए ही ये सारी बातें स्थूल रूप से बताई गई हैं। कर्त्ता कारण और कार्य को समझे बिना ये चार प्रकार समझ में नहीं आते। कर्त्ता स्वयं जीव है। काल, स्वभाव, नियति, पूर्वकृत कर्म और पुरुषार्थ ये पाँच कारण हैं। कर्त्ता उस प्रकार के कारणों को पाकर अनादि काल से अच्छे-बुरे कार्यों को करता है। इन कार्यों के द्वारा आत्मा अच्छे-बुरे पुद्गलों को अपनाता है। इन अपनाये हुए पुद्गलों को जैन शास्त्रों में कर्म के नाम से सूचित किया जाता है।

कर्म पुद्गल की विशेषता

कर्म पुद्गल की विशेषता जैसी जैन दर्शन में निरूपित है वैसी अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। वैसे कर्म को प्रत्येक दर्शन ने मंजूर किया है, परंतु किसी ने क्रियामात्र को कर्म कहा, तो किसी ने अनुष्ठान विशेष को कर्म कहा, और उसके फलादेश के समय ईश्वर को संकल्पित करके संसार की रचना, कर्मफलों को देना आदि कार्य उसके आधीन कर दिये। उस हालत में ईश्वर की प्रेरणा से ही जीव स्वर्ग में या नरक में जाता है- ऐसे सिद्धांतों की रचना (ईश्वरप्रेरितो गच्छेत् स्वर्गं वा श्वभ्रमेव वा) भी उन-उन दर्शन ग्रंथों में देखी जाने लगी।

जैन दर्शन में ईश्वर

जैन दर्शन में ईश्वर किसी एक को मंजूर नहीं किया। न जगत्कर्त्ता रूप से ही उसे कोई महत्त्व दिया। न वह

कर्मफलों का दाता ही माना गया। जगत और उसमें होनेवाली प्रत्येक घटना प्रकृति को पूर्वसूचित काल स्वभाव नियति पूर्वकृत कर्म और पुरुषार्थ की उपज मात्र मानी गई है। ईश्वर ऐसे प्रपंचों में नहीं पड़ा करता। प्रत्येक आत्मा में परमात्मता छिपी हुई है। उसे व्यक्त करने पर आत्मा परमात्मा हो जाता है। अनादि काल की अपेक्षा से अनंत परमात्मा हो गये हैं, और भविष्य में भी अनंत परमात्मा होंगे।

जीव और कर्मों का संबंध

जीव और कर्म का संबंध अनादि काल से चला आ रहा है। जीव और कर्म में से किसी एक की पहिले या पीछे उत्पत्ति नहीं हुई। समय-समय पर पुराने कर्म, अपनी संतान परंपरा छोड़ते हुए, क्षीण होते जाते हैं। यह कर्मों की संतान परंपरा तब तक बराबर जारी रहेगी। जब तक कि उसके अनुकूल उन काल-स्वभाव आदि पाँच कारणों की परंपरा बनी रहेगी। अनादि से जारी रहने वाला कर्मसंबंध कितनेक जीवों के साथ अनंत काल तक रहेगा। यह पहला भंग १ अनादि अनंत कहा जाता है।

संसारी जीव

संसारी जीव अपने शरीर के प्रमाण में ही फैला हुआ रहता है, रबर के फीते की मिसाल उसमें घटित नहीं होती। क्योंकि वह तोड़ा जा सकता है। कर्म परमाणुओं के समवाय से फीता बनता है। अत: प्रति परमाणु रूप में वह टूट-टूटकर बिखर सकता है। जीव टूटता नहीं। न वह टूट-टूटकर बिखरता ही है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म और स्थूलातिस्थूल रूप में भी वह एक और अखंड ही बना रहता है। इस हालत में जीव स्वभाव से ही आदि और अंतरहित है।

अनादि अनंत

अनादि अनंत काल की सत्ता वाले जीव के साथ कर्म का संयोग प्रवाह रूप से अनादि काल से चला आ रहा है। जैसे एक मुर्गी कई अंडों की जननी होती है, वैसे ही पूर्व कर्म संयोग, कारणों के रहते हुए, नये कर्मसंयोगों का जनक होता जाता है। मुर्गी से अंडा, अंडे से मुर्गी, यह प्रवाह अनादि काल से चला आ रहा है, वैसे ही पूर्वापर कर्म संयोग-वियोग का तांता अनादि काल से प्रवाह रूप से चला आ रहा है। सभी अभव्य जीवों के साथ एवं कितने ही भव्य जीवों के साथ, प्रवाह रूप से आनेवाला अनादि कर्मसंबन्ध अनंत काल तक होता रहता है। ऐसे सम्बन्ध को शास्त्रों में 'अणाइया अपज्जवसिया' कहा है।

संयोग के पूर्व

संयोग के पूर्व उसके नये कर्मसंयोग का सर्वथा वियोग होता ही है। उसे तार्किक परिभाषा में प्रागभाव कह सकते हैं। प्राक् अभाव कारणों के द्वारा कर्मसंयोग हो जाने पर मिट जाता है। मिट्टी में घर का प्रागभाव होता है। कुम्हार आदि कारणों के मिलने पर मिट्टी से घर का प्रादुर्भाव होते ही अभाव भाव रूप में परिणत हो जाता है। पुराने कर्म के संयोग का वियोग होता है, और वही वियोग नये कर्मों के संयोग का हेतु हो जाता है। इस तरह जन्यजनक भाव का तांता अनादि काल से प्रवाहरूप से चला आता है। अनंत काल तक वैसे हेतुओं के बने रहने से चलता रहेगा। अत: जैन सिद्धान्त संमत 'अणाइया अपज्जवसिया' भंग बुद्धिवाद की पक्की कसौटी पर कसा हुआ ठीक प्रतीत होता है।

अणाइया सपज्जवसिया

'अणाइया सपज्जवसिया' जिसकी आदि तो नहीं, किन्तु अंत हो जाता है। जैसे कि भव्य-मुक्त होनेवाले जीवों का कर्मों के साथ संयोग अनादिकाल से प्रवाह रूप से चला आ रहा है, परंतु वैसे कर्मबन्ध के कारणों के मिट जाने से और मुक्ति के अनुकूल कर्मनाशक कारणों के पैदा हो जाने से प्रवाह रूप से अनादि उस कर्मसंयोग का अंत हो जाता है। तार्किक परिभाषा में इसको प्रध्वंसाभाव कहा जाता है जो सदसत् अर्थात् पूर्व में था बाद में मिट गया। भव्य जीवों का कर्मसंयोग अनादि सांत माना जाना है। इस दूसरे भंग की विवेचना भी सुसंगत बुद्धिगम्य होती है। सदा से ऊगने वाला बीज भून जाने पर फिर नहीं ऊगता। इस ढंग के उदाहरण इस भंग को समझने में उपयोगी होते हैं।

प्रवाह रूप से अनादि कर्म

प्रवाह रूप से अनादि कर्मसंयोग के मिट जाने पर जीव मुक्त हो जाता है। जीव की यह अवस्था 'साइया अपज्जवसिया' मानी जाती है। हर एक मुक्त जीव की मुक्ति होने की आदि होती है पर इस मुक्तता का कभी अंत नहीं होता। क्योंकि मुक्त हुए बाद कर्मबन्धन का कोई हेतु बाकी नहीं रह जाता। यह बात अभ्रान्त रूप से कही जा सकती है कि 'छिन्ने मूले कुत: शाखा'।

सादि सांत भंग

यह भंग जिसकी आदि भी है और अंत भी है, ऐसी अवस्था में लागु होता है। सम्यक्त्व से पतित जीव के मिथ्यात्व की आदि भी है और अर्द्धपुद्गल परावर्त प्रमाण काल में अवश्य ही मुक्ति प्राप्त होगी। उस समय उस मिथ्यात्व का अंत भी हो जायेगा। शास्त्रीय परिभाषा में इसे 'साइया सपज्जवसिया' कहा गया है। साइया अपज्जवसिया और साइया सपज्जवसिया भंगों में तार्किक परिभाषा के अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव लागु होते हैं। मुक्त जीवों की मुक्ति यदि आदि वाली और अनंत मानी जाती है तो क्या कोई ऐसा समय भी था, जब मुक्तिमार्ग ही नहीं था? इसके जवाब में मुक्त व्यक्ति की अपेक्षा मुक्ति की आदि है, परंतु समूह रूप से मुक्त जीवों की विचारणा में अनंतकालीन मुक्ति के प्रवाह को हमें नहीं भूलना चाहिए और वह मुक्ति का प्रवाह अनंत काल से प्रस्तुत है। अतः मुक्तिमार्ग किसी समय नहीं था, ऐसा नहीं हो सकता। मुक्त जीव स्वयं सादि अनंत भंग में स्थित हैं और मुक्ति का मार्ग, प्रवाहरूप से अनादि अनंत भंग में।

अनादि बंध या मुक्ति

यदि स्थिर चित्त से इसका विचार किया जाय तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है, कि प्रवाह रूप से बंध अनादि है और मुक्ति भी अनादि ही है। यह एक ऐसी समस्या है, जिसको स्थूल बुद्धि से सोचने पर कुछ उलझन सी पैदा होगी। जैसे कि:- जो बना है वह बिगड़ेगा, और जो बना नहीं वह बिगड़ेगा भी नहीं। जो आया है वह जावेगा, और जो आया नहीं वह जायेगा भी नहीं। जिसकी आदि है उसका अंत भी है, जिसकी आदि नहीं, उसका अंत भी नहीं। यह उलझन द्रव्य, गुण और पर्यायों को भलीभांति न समझने से ही होती है। उदाहरण के लिए बनना और बिगड़ना अथवा जाना या आना अपेक्षा दृष्टि से द्रव्य की पर्याय है। दूध रूप से बिगड़ने वाला द्रव्य दही रूप बनता है और दही रूप से बिगड़ने वाला द्रव्य छाछ रूप में-मक्खन रूप में बन जाता है। द्रव्य अपने रूप में अर्थात् पुद्गल रूप में न कभी बनता है न कभी बिगड़ता है। पर्याय-अवस्था विशेष बनता भी है और बिगड़ता भी है। जैसे जिनदास नामक व्यक्ति जोधपुर से जयपुर गया। इस घटना में जोधपुर वालों की दृष्टि से जिनदास का जाना होता है तो जयपुर वालों की दृष्टि से आना होता है। जिनदास नामक जो द्रव्य है, उसमें से न कुछ गया और न कुछ आया ही। बनना बिगड़ना और जाना आना ये क्रिया के रूपान्तर मात्र हैं।

आदि अन्त की कल्पना

यह कल्पना अवस्था विशेष को लक्ष्य में रखकर ही की जाती है। अवस्था विशेष भी सूक्ष्म और स्थूल दो तरह की होती है। सूक्ष्म अवस्था विशेष प्रति समय होते ही जाते हैं। भगवान् उमास्वातिजी के तत्त्वार्थाधिगम सूत्र का 'उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्तं सत्' सूत्र समझना चाहिए। प्रतिक्षण नये पर्यायों का उत्पादन और पूर्व पर्यायों का व्यय-नाश होते हुए भी सद् द्रव्य ध्रुवता वाला होता है। जीव द्रव्य संसार में रहते हुए संसारी अवस्था वाला होता है। और वही मुक्त होने से मुक्त अवस्था वाला हो जाता है। संसारी और मुक्त ये दोनों जीव द्रव्य की स्थूल अवस्थाएं हैं। उनकी सत्ता भी उन-उन कारणों पर निर्भर रहती है। संसार के कारणों के रहते हुए संसारी अवस्था रहती है और उन कारणों के मिट जाने पर उसका अंत भी हो जाता है।

संसारी और मुक्त

ये दोनों अवस्थाएं प्रवाह रूप से अनादि अनंत होती हैं। जैन दर्शन अपेक्षाप्रधान दृष्टि से देखने के लिए हमें प्रेरित करता है इसलिए परीक्षाप्रधान बुद्धि वालों को वह अपनी ओर आकर्षित करता है। काल के प्रभाव से पड़ौसी दर्शनों के प्रसंग एवं राजनैतिक और सामाजिक क्रान्तियों के विषम वायुमण्डल में उसके साहित्य का काफी अंग भंग हुआ है। फिर भी मौलिक तत्त्वों की विचारणा में वह अपनी सानी नहीं रखता।

कर्मबन्धन और मोक्ष

इन दोनों अवस्थाओं के अनादित्व की आलोचना जैन दृष्टि से इस लेख में की गई है। इससे संबंध रखने वाली दूसरी आलोचनाएं- जैसे कि संसार का कर्त्ता कौन? कर्मों का फलदाता कौन? मुक्त जीव केवलज्ञानी संसार के आदि अंत को देख सकते हैं या नहीं? अगर देख सकते हैं तो संसार की अनादिता कैसी? नहीं देख सकते तो ज्ञान पूर्णता कैसी? केवलज्ञान पूर्ण या अपूर्ण? मुक्त जीव संसार में वापस कर्म बन्धन करते हैं या नहीं? आदि-आदि हैं। उनकी विचारणा आगामी अंकों में करने की भावना रखता हूँ।

पालीताना में सुविहित चातुर्मास हेतु प्रवेश उत्सव

मंगल प्रवचन पूज्यश्री द्वारा

गुरु वंदना

पू. प्रवर्त्तिनीजी गणिनी जी आदि को काम्बली ओढ़ाता रांका परिवार

पूज्यश्री का मंगल प्रवचन

मुनि मंडल

गुरुपूर्णिमा पर जीरावला ट्रस्ट मंडल गुरु पूजन करते हुए

उपस्थित भक्त

प्रवेश में उल्लास ट्रस्टियों का

रांका परिवार द्वारा गुरु पूजन

पालीताना में सुविहित चातुर्मास हेतु प्रवेश उत्सव

गुरु पूर्णिमा उत्सव

मुनि पू. मेहुलप्रभसागरजी द्वारा प्रवचन

केयुप व भक्त मंडल

साध्वी मंडल

उपस्थित श्रद्धालु

उपस्थित श्राविका

पू. मैत्रीप्रभसागरजी के स्वर्गवास निमित्त महोत्सव

गुरु पूर्णिमा का आयोजन

पालीताना 23 जुलाई। पालीताना श्री जिनहरि विहार धर्मशाला के विशाल हॉल में गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य गुरु भक्ति का अनूठा आयोजन किया गया।

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का उनके प्रवास स्थल से प्रवचन स्थल तक साध्वी समुदाय व श्रावक श्राविकाओं ने पंक्तिबद्ध होकर स्वागत किया। पू. साध्वी मंडल ने स्वागत हेतु मंगल श्लोकों का वांचन किया।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने गुरु पूर्णिमा का इतिहास बताते हुए कहा– सनातन धर्म में वेद व्यास के जन्म दिवस के कारण आज के दिन गुरु पूर्णिमा मनाई जाती है। जैन धर्म में दिगम्बर परम्परा की मान्यता के अनुसार परमात्मा महावीर को गणधर गौतमस्वामी आज ही के दिन मिले थे। इस कारण इस पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा मनाई जाती है।

पूज्यश्री ने कहा– हम सभी अपूर्ण हैं। पूर्ण होने का पुरुषार्थ ही धर्म है। जीवन विकास के लिये गुरु का मार्गदर्शन जरूरी है। उन्होंने अपने जीवन की घटनाऐं सुनाते हुए पूज्य गुरुदेवश्री का स्मरण किया।

इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने गुरु की महिमा का वर्णन किया। पूज्यश्री ने अपने संस्मरण सुनाते हुए पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति अपने समर्पण भावों को व्यक्त किया। पूज्य मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. ने गुरु शब्द की व्याख्या की। अपने आपको सौभाग्यशाली बताया कि हमें पूज्य गुरुदेवश्री प्राप्त हुए हैं।

इस अवसर पर सुविहित चातुर्मास समिति के संयोजक संघवी श्री अशोकजी भंसाली, खरतरगच्छ पेढी व प्रतिनिधि महासभा के महामंत्री श्री पदमजी टाटिया, श्री जिनहरिविहार के महामंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया, महासंघ के कोषाध्यक्ष श्री बाबुलालजी छाजेड, केयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी लूणिया ने अपने समर्पण भावों को व्यक्त किया। गुरुपूजन का लाभ श्री जीरावला पार्श्वनाथ जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट के ट्रस्टियों ने लिया। इस अवसर पर सूरत, अहमदाबाद, बालोतरा, जालोर, हैदराबाद, चेन्नई, बैंगलोर, सांचोर, मुंबई आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन हुआ।

पूज्य मुनि श्री मैत्रीप्रभसागरजी म. के देवलोक निमित्त

पालीताना में त्रिदिवसीय महोत्सव

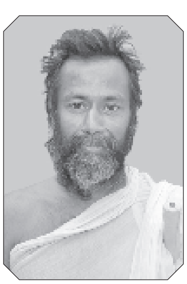

पालीताणा 11 जुलाई। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल साधु–साध्वी मंडल की पावन सानिध्यता में पूज्य आचार्य श्री के शिष्य पू. महातपस्वी जीवदया प्रेमी मुनिश्री मैत्रीप्रभसागरजी म. के स्वर्गारोहण के उपलक्ष में त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। पूज्यश्री का ता. 29 जून 2021 को स्वर्गवास हो गया था। महोत्सव के पहले दिन ता. 9 जुलाई 2021 को श्री वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक महापूजन पढाया गया। ता. 10 जुलाई 21 को लघुशान्ति स्नात्र महापूजन पढ़ाया गया। ता. 11 जुलाई को दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

महोत्सव का संपूर्ण लाभ पूज्यश्री के सांसारिक परिवारजन श्री रमेश कुमार जी, राहुल कुमारजी, धीरज कुमारजी कोचर परिवार श्री भीखमचंदजी कोचर परिवार खड़गपुर निवासी ने लिया। महापूजन पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. के मार्गदर्शन में संपन्न हुए।

पूज्यश्री का प्रवेश

पालीताना में चातुर्मास हेतु प्रवेश संपन्न

पालीताना 18 जुलाई। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मननप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मृणालप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मुकुलप्रभसागरजी म. ठाणा 11 एवं पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा 7, पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ठाणा 24, पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. ठाणा 27, पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा 10, पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. पू. विमलप्रभाश्रीजी म. ठाणा 19, पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 2, पूजनीया साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म. ठाणा 3, पूजनीया साध्वी श्री शांतरेखाश्रीजी म. 1 आदि कुल 104 साधु-साध्वीजी भगवंतों का श्री सिद्धाचल महातीर्थ के परम पावन वातावरण में श्री जिनहरि विहार धर्मशाला में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश आषाढ सुदि 9 रविवार ता. 18 जुलाई 2021 को अत्यन्त आनंद व परम मंगल वातावरण में संपन्न हुआ।

भव्य शोभायात्रा का प्रारंभ मोहनबाग से हुआ जो तलेटी होकर मुख्य मार्गों से गुजरती हुई श्री जिनहरि विहार धर्मशाला पहुँची जहाँ धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री ने कहा- यह चातुर्मास इचलकरंजी में होना था परंतु कोरोना के कारण संभव नहीं हुआ। पर हमारे अन्तर में इस बात की प्रसन्नता है कि इस वर्ष 5 वर्षों के अन्तराल के पश्चात् पूजनीया माताजी म. का सानिध्य प्राप्त होगा। श्री सिद्धाचल की इस पावन भूमि में हमें भक्ति और सत्संग का वातावरण निर्मित करना है।

इस अवसर पर पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., प्रियकल्पनाश्रीजी म., विरागज्योतिश्रीजी म., विश्वज्योतिश्रीजी म., मधुरिमाश्रीजी म., प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म., सम्यक्प्रभाश्रीजी म., कुमारी श्रद्धा लूंकड ने वक्तव्य एवं भक्ति गीतों द्वारा पूज्यश्री का स्वागत करते हुए चातुर्मास का महत्त्व समझाया।

मूल जैतारण वर्तमान में चेन्नई निवासी श्री कन्हैयालालजी रांका परिवार के श्री सुभाषचंदजी, अशोकचंदजी, ललितकुमारजी, कुशालचंदजी रांका परिवार ने चढावा लेकर पूज्यश्री का गुरुपूजन किया व कामली ओढाई। श्री सुविहित उत्सव समिति की ओर से लाभार्थी रांका परिवार का बहुमान किया गया। संचालन इचलकरंजी मणिधारी संघ के अध्यक्ष श्री अरूणकुमारजी ललवानी ने किया।

इस अवसर पर सुविहित चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक संघवी श्री अशोकजी भंसाली ने पूज्यश्री का अभिनंदन करते हुए इस चातुर्मास में सकल श्री संघ से जुडने का आह्वान किया। इस अवसर पर जिन हरि विहार के महामंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया, कोषाध्यक्ष श्री पुखराजजी तातेड, निर्माण कमिटी के संयोजक एवं खरतरगच्छ पेढी के कोषाध्यक्ष श्री दीपचंदजी बाफना, प्रतिनिधि महासभा के कोषाध्यक्ष श्री रतनलालजी बोहरा, चातुर्मास समिति के सहसंयोजक श्री जसराजजी छाजेड, संघवी श्री मोहनलालजी मरडिया परिवार, ट्रस्टी संघवी श्री रतनलालजी बोथरा आदि बडी संख्या में श्रावक लोग उपस्थित थे।

प्रवेश के इस शुभ अवसर पर मुंबई, बीकानेर, अहमदाबाद, इचलकरंजी, बाडमेर, चौहटन, जोधपुर, पाली, सूरत, रतलाम, छत्तीसगढ, जयपुर, सांचोर, चितलवाना, कारोला, सिणधरी, रायचूर, हैदराबाद, चेन्नई, खेतिया, खापर, बडौदा, ब्यावर, रायपुर, बैंगलोर, शहादा आदि कई क्षेत्रों के श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

प्रेषक-मुकेश प्रजापत

दादा गुरुदेव की पुण्यतिथि मनाई गई

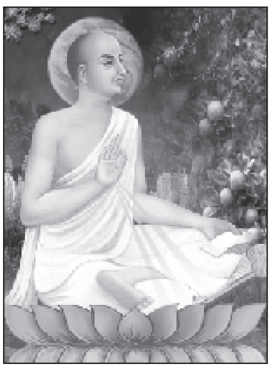

पालीताना 20 जुलाई। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री जिनहरि विहार धर्मशाला में ता. 20 जुलाई 2021 को प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की 867वीं पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। दोपहर में दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने दादा गुरुदेव के व्यक्तित्व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उस काल खंड की परिस्थितियों का गहन विवेचन किया। उन्होंने कहा- बारहवीं शताब्दी के उस काल खंड का वातावरण साम्प्रदायिक होता जा रहा था। ऐसे समय में प्रथम दादा गुरुदेव आगे आये और जैन परम्पराओं की सुरक्षा के लिये एक ठोस आधार प्रस्तुत करते हुए उन्होंने अपने उपदेश व साधना के प्रभाव से लाखों परिवारों को जिन धर्म की दीक्षा दी। यह दादा गुरुदेव का ही प्रताप है जो आज लाखों की संख्या में जिन धर्मावलम्बी जिनधर्म की आराधना कर रहे हैं।

पालीताना में उपधान तप का आयोजन होगा

पालीताना 1 अगस्त। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म. सा. के सुशिष्य पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणिवर्य श्री मयंकप्रभसागरजी म. आदि विशाल साधु-साध्वी भगवंतों का ऐतिहासिक सुविहित चतुर्मास चल रहा है। पूज्य आचार्यश्री की पावन निश्रा में महामंगलकारी उपधान तप का आयोजन होगा।

सांचौर सत्यपुर निवासी श्रीमती टीपू देवी कालूचंदजी किसनाजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार ने अपने भावों को पूज्यश्री के समक्ष प्रकट किए। श्री अरविंदजी श्रीश्रीश्रीमाल ने कहा हमारे परिवार की भावना श्री सिद्धाचल तीर्थ में आपकी निश्रा में महामंगलकारी उपधान तप कराने की है। हमारी विनती को स्वीकार कर यह लाभ हमारे परिवार को प्रदान करने की कृपा करावें।

पूज्यश्री ने कहा- आप सौभाग्यशाली हैं कि इस सुविहित चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी का लाभ आपने लिया है। चातुर्मास से पूर्व दो महीने का भी आपने लाभ लिया था। आपकी भावना को स्वीकार करते हुए उपधान तप का संपूर्ण लाभ आपके परिवार को मिले।

पूज्य श्री ने कहा कि उपधान तप की महिमा अनंत है। उपधान तप करने के बाद ही श्रावक को नवकार मंत्र का अधिकार प्राप्त होता है। श्री सिद्धाचल तीर्थ में उपधान करना-करवाना यह परम पुण्योदय का प्रतीक है।

यह मंगलकारी उपधान तप का भाद्रपद सुदी 14 रविवार दिनांक 19 सितंबर 2021 से प्रारंभ होगा। प्रवेश का दूसरा मुहूर्त्त आसोज वदि 1 मंगलवार ता. 21 सितम्बर 2021 को होगा। माला महोत्सव कार्तिक शुक्ला चतुर्थी सोमवार दिनांक 8 नवंबर 2021 को संपन्न होगा। जिन्हें भी उपधान तप करना हो वे 10 अक्टूबर तक शीघ्र कार्यालय से संपर्क कर लाभ प्रदान करावें। श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट, पालीताना कार्यालय, फोन नं.- 94270 63069

धोरीमन्ना में चातुर्मास प्रवेश की धूम

धोरीमन्ना 18 जुलाई। धर्म नगरी धोरीमन्ना में परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञावर्ती पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसागरसूरीश्वरजी म.सा. व पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. एवं पूज्या साध्वीवर्या विमलप्रभाश्रीजी म. की निश्रावर्तिनी पू. साध्वी जयरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मासिक नगर प्रवेश की शोभायात्रा स्टेशन रोड़ धोरीमना में भव्य रूप से संपन्न हुई।

नगर प्रवेश में सभी पुरुष चुंदरी साफा एवं सफेद वस्त्र एवं बहिनें अपने मण्डल के परिधान में शोभा बढ़ा रहे थे। मंगल ध्वनियों का वादन करते बैण्ड वादक और उपाध्याय प्रवर व साध्वी मण्डल के पीछे-पीछे चलते गुरु महिमा का गुणगान करते, जिनशासन की जय-जयकार करते भक्तजन, श्रावक-श्राविकाए, बैंड की धुन एवं ढ़ोल की थाप पर गुरुभक्त युवा वर्ग जगह-जगह पर झूम रहे थे। प्रवेश के दौरान जगह-जगह पर गहुंली व तोरण द्वार से स्वागत किया गया।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद केयुप, केएमपी व महिला मण्डल सहित कई मंडलों एवं सैंकडों की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने शोभायात्रा में पधारकर जिन शासन की शोभा बढ़ाई। चातुर्मासिक प्रवेश को लेकर नगरवासियों में अपने गुरु के प्रति जबरदस्त उत्साह का माहौल नजर आ रहा था। धोरीमना नगर का दृश्य अद्‌भूत नजर आ रहा था।

चातुर्मास प्रवेश की शोभायात्रा स्टेशन रोड़ से शुरु होकर नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई चातुर्मास स्थल शान्तिनाथ पाण्डाल में पहुंची। जहां पर गुरुदेव का सामैया के साथ स्वागत किया गया। नगर प्रवेश की शोभायात्रा के चातुर्मास स्थल शान्तिनाथ मन्दिर के पास पहुंचने के बाद धर्मसभा, गुरुवंदन एवं मंगलाचरण से प्रारंभ हुई। धर्मसभा में सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। बीकानेर से पधारे सुनिल भाई पारख व अरिहंत कुमार नाहटा ने स्वागत भजन प्रस्तुत किया। कई बालिकाओं द्वारा नृत्य व गीत के माध्यम से स्वागत किया गया।

संघ के अध्यक्ष बाबूलालजी लालण ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम सबको चातुर्मासिक धर्म आराधना से जुड़कर चातुर्मास को स्वर्णिम एवं ऐतिहासिक बनाना है व गुरु भगवन्तों का स्वागत व अभिनन्दन किया। इसके बाद आचार्यश्री व साध्वी मण्डल को काम्बली ओढाने का चढावा मूलीदेवी आसूलालजी नथोणी रांका सेठिया परिवार धोरीमना वाले व गुरुपूजन कर लाभ लूणिया परिवार धोरीमना वालों ने लिया।

पू. साध्वी नूतनप्रियाश्रीजी ने कहा कि गुरुभक्तों को इस सम्पूर्ण वर्षावास का ज्यादा से ज्यादा लाभ लेकर तप आराधना से आत्मा का कल्याण करने का हम सबका लक्ष्य हो।

पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसागरसूरीश्वरजी म.सा. ने सबको आव्हान करते हुए कहा चातुर्मास परिवर्तन का माध्यम बने पुनरार्वतन का नहीं। इस चातुर्मास में धर्म आराधना करके कर्मो की निर्जरा करनी है। अध्यक्ष बाबूलाल लालण ने बाहर से पधारे हुए अतिथियों, शोभायात्रा में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग करने वाले संस्थाओं व मण्डलों का आभार व्यक्त किया। प्रवेश समारोह में मोकलसर, अहमदाबाद, भादरेस, चौहटन, धोरीमन्ना, सूरत, अहमदाबाद, चितलवाना, पाली, दिल्ली, इचलकरंजी, बालोतरा, सिणधरी, विशाला, सांचौर, जालौर, सियाणी, रामसर, हरसाणी, गुडामालाणी, जोधपुर, पाली, भिवंडी, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ आदि संघ के पदाधिकारियों व गुरुभक्तों ने प्रवेश पर शिरकत की।

वड़ोदरा में चातुर्मास प्रवेश

वडोदरा 18 जुलाई। श्री खरतरगच्छ जैन संघ, वडोदरा के प्रबल पुण्योदय से इस वर्ष 30 सालों के बाद प्रथम बार पूज्य साधु भगवतों का पावन चातुर्मास प्राप्त हुआ है।

पूज्य गच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा की अनुपम आज्ञा से पूज्य स्थविर प्रवर श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा., पू. गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा., नूतन दीक्षित मुनिराज मंथनप्रभसागरजी म., पूज्य मतीशप्रभसागरजी म. ठाणा 4 का चातुर्मासिक पावन प्रवेश दिनांक 18 जुलाई 2021 के शुभदिन सुबह में श्री लक्ष्मीबाई फौजमलजी झाबक खरतरगच्छ जैन उपाश्रय में उल्लास पूर्वक सानंद संपन्न हुआ।

तत्पश्चात आजवा रोड स्थित झाबक भवन में पावन प्रवेश के उपलक्ष में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के प्रारम्भ में संघ के अध्यक्ष श्री नरेशजी पारेख ने पूज्य गुरुदेवों का एवं पधारें हुए सभी महानुभावों का अभिनन्दन किया। श्री कुशल पवित्र मण्डल की महिलाओं ने प्रवेश के उपलक्ष में स्वागत गीत गाकर अभिनन्दन के अहोभाव प्रगट किये। इस मौके पर बाल कलाकार हर्ष संचेती ने संगीतमय गीत के जरियें भाववाही नृत्य करके पूज्य गुरुदेवों का भावसभर स्वागत किया।

धर्मसभा में पूज्य गणि श्री मनीषप्रभसागरजी म. एवं पूज्य मुनि मंथनप्रभसागरजी म. ने अपने प्रासंगिक प्रवचन में सभी को इस चातुर्मास में आत्मकल्याण हेतु आराधना, स्वाध्याय, जिनवाणी श्रवण एवं यथायोग्य तप साधना का लाभ लेने के लिए खास अनुरोध किया। अंत में पदमचंदजी गोलछा की स्वरचित कविता का गान किया। अंत में नौकारशी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का संचालन धनपत श्रीश्रीश्रीमाल ने किया।

–अमितकुमार सालेचा

सूरत में चातुर्मास प्रवेश

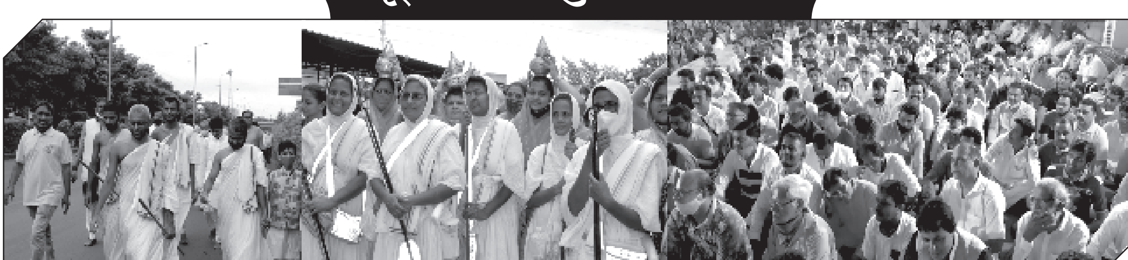

सूरत 18 जुलाई। सूरत में बाडमेर जैन श्रीसंघ–सूरत और सुविहित चातुर्मास समिति के तत्त्वावधान में दि. 18 जुलाई को पू. खतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गणिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनिश्री महितप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मौलिकप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनिश्री मृगांकप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 4 तथा पूज्या प्रखर व्याख्यात्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पूज्या साध्वी प्रशमिताश्रीजी म., पू. साध्वी श्री अर्हम्‌निधिश्रीजी म., पू. साध्वी श्री परमप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का भव्य जुलूस एवं विशाल जनमेदिनी के साथ चातुर्मास प्रवेश हुआ। लगातार दो वर्षों से चातुर्मास की विनंती कर रहे संघ में खुशियों की बहार छाई हुई थी। सबसे

भीतर में आनंद और उल्लास की लहर थी।

पूज्य गुरु भगवंतों को सामैया कर बधाने के पश्चात् प्रवचन मंडप में उनका प्रवेश हुआ। पूज्य गणिवर्यश्री के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सर्वप्रथम बाडमेर जैन श्री संघ एवं सुविहित चातुर्मास समिति-सूरत के अग्रणी ट्रस्टीयों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम को गति प्रदान की गई। इसी कड़ी में संचालनकर्ता गौतमजी पारख ने चातुर्मास की प्रारंभिक भूमिका बताई। खरतरगच्छ महिला परिषद, कुशल सज्जन महिला मण्डल, शकुंतला डागा, पुखराजजी संखलेचा, राजुजी पारख, मदनजी, महेशजी मालू द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। तथा विनती सिंघवी, लीलादेवी छाजेड, हिमांसी वडेरा, नखतमलजी, श्वेता जैन, जिनकुशलसूरि सामायिक मंडल-नंदूरबार के सदस्य तथा बाबूलालजी द्वारा स्वागत उद्‌बोधन दिया गया।

चातुर्मास समिति के अध्यक्ष पुरुषोतमजी धारीवाल, अध्यक्ष गौतमजी हालावाला, संरक्षक श्री चम्पालालजी बोथरा तथा खरतरगच्छ युवा परिषद के अध्यक्ष गौतमजी मालू ने चातुर्मास को सफल बनाने हेतु विविध आयाम बताते हुए भीतर के आनंद को अभिव्यक्त किया। मुख्य अतिथि श्री आर. के. पुरोहित और श्री दिनेशजी पुरोहित ने भी अपने उद्‌बोधन द्वारा गुरु भगवंतों को बधाया। इन पावन पलों में अहमदाबाद, हालोल, भिवंडी, चौहटन, पाली, बाड़मेर, नवसारी, नंदूरबार, तलोदा, तिरुपुर, मुम्बई आदि स्थानों से गुरुभक्त पधारें।

गणिश्री ने कहा कि यह चातुर्मास ज्ञान और क्रिया का शंखनाद करने का पर्वोत्सव है। इस चातुर्मास में अपनी आत्मा में हमें डूबकी लगानी है। यह चातुर्मास जीवन-परिवर्तन का उत्सव है। मंगल प्रवेश मात्र उपाश्रय में ही नहीं अपितु मन मंदिर में करवाना है पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि मौलिकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म. तथा पूज्या साध्वी अर्हम्‌निधिश्रीजी म. ने अपने वक्तव्य में चातुर्मासिक कर्तव्यों की विवेचना की।

बाडमेर जैन श्री संघ सूरत के अध्यक्ष एवं सुविहित चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री गौतमजी बोहरा एवं पुरुषोतमजी धारीवाल ने सभी का आभार मानते हुए चातुर्मास को सफल बनाने का निवेदन किया।

पाटण में चातुर्मास प्रवेश

पाटण 11 जुलाई। खरतरगच्छ नामकरण स्थली पाटण नगरी में चातुर्मास हेतु पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 3 एवं पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री प्रियकृतांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियकृपांजनाश्रीजी म. तथा पू. कुशल वाटिका प्रेरिका बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री आगमरुचिश्रीजी म. साधु-साध्वी मंडल का मंगल प्रवेश आषाढ सुदि 1 रविवार ता. 11 जुलाई 2021 को शुभ मुहूर्त्त में संपन्न हुआ।

पूज्य श्रमण-श्रमणी गण संस्कृत व्याकरण, न्याय, तत्त्वज्ञान आदि के विशिष्ट अभ्यास के लिये पाटण नगर में चातुर्मास कर रहे हैं। प्रवेश के मंगल अवसर पर अहमदाबाद से श्री पुखराजजी तातेड आदि श्रावकगण उपस्थित थे।

वि. सं. 1075 में पाटण नगर में ही दुर्लभराज ने चैत्यवासियों के साथ हुए शास्त्रार्थ में विजयी रहने पर चन्द्रगच्छीय आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि को खरतर बिरुद अर्पण किया था।

इस नामकरण को हजार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी द्वारा भूखण्ड क्रय कर वहाँ खरतरगच्छ सहस्राब्दी भवन का निर्माण किया गया है। उसी भवन में चातुर्मास की साधना चल रही है।

खापर में गच्छगणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि का मंगल प्रवेश संपन्न

खापर 18 जुलाई। पू. खरतरगच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहेब की आज्ञानुवर्तिनी पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पू. गच्छगणिनी मारवाड ज्योति खान्देश ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी हर्षप्रज्ञाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी अभिनंदिताश्रीजी म.सा., पू साध्वी समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी अर्पितप्रज्ञाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी नयनंदिताश्रीजी म.सा. ठाणा 6 का 18 जुलाई को खापर नगर में मंगल प्रवेश हुआ। खापर के मुख्य मार्गो से शोभायात्रा निकाली गई। जैन दादावाड़ी में चातुर्मास प्रवेश निमित्त अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद शाखा खापर एवं अक्कलकुवा की ओर से प्रवेश गीत गाया गया। नई उमंग महिला मंडल की ओर से विशेष प्रस्तुती की गई।

ज्ञान वाटिका खापर के बच्चों ने नृत्य किया। कार्यक्रम में माजी उपसरपंच ललित जाट, जैनश्रीसंघ के भूतपूर्व अध्यक्ष मोहनलाल बोथरा, सोलापुर के कल्पेश मालू, केयुप अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक शुभम भंसाली, अशोक कोचर, सौ. गौरी बोथरा, महावीर छाजेड, उज्वल कोचर, दिव्या बोथरा, स्नेहा बोथरा ने अपने मनोगत व्यक्त करते हुवे चातुर्मास की शुभकामनाएं दी।

प्रवचन के माध्यम से पू. गुरुवर्या श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. ने चातुर्मास में धर्म आराधना से जुड़कर ज्ञान, आराधना, तप, तपस्या आदि कर अपने जीवन को सार्थक बनाते हुवे इस चातुर्मास को सफल बनाने की प्रेरणा दी। साथ ही साध्वी हर्षप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने चातुर्मास के महत्व के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान राज्य से जैन समाज के मान्यवर उपस्थित थे। कार्यक्रम में खापर जैन संघ अध्यक्ष सुरेशचंद बोथरा, मोहनलाल बोथरा, रतनलाल भंसाली, संतोषचंद गुलेच्छा, बंसीलाल चोपड़ा, सुरेश एस. बोथरा, राणुलाल बरडिया, लूणकरण पारख, सुरेश गुलेच्छा, राणुलाल बोथरा, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद, महिला परिषद, बालिका मंडल ने अपना योगदान दिया। कार्यक्रम का संचालन केयुप खापर अध्यक्ष अरविंदजी बोथरा ने किया।

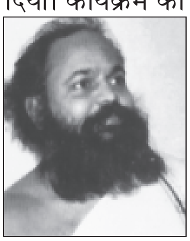

गणिवर्य मणिरत्नसागरजी का चातुर्मास प्रवेश

नई दिल्ली। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती पूज्य गणिवर्य श्री मणिरत्नसागरजी म.सा., पूज्य मुनिश्री मलयरत्नसागरजी म.सा. ठाणा 2 का चातुर्मास प्रवेश नई दिल्ली की छोटी दादाबाड़ी में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दादाबाड़ी ट्रस्ट मंडल, खरतरगच्छ समाज के गणमान्यजनों ने पूज्य गुरु भगवंत का बडे ही उत्साह के साथ चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश करवाया। गुरु पूर्णिमा पर राजस्थान के गौपालन मंत्री प्रमोद जैन भाया ने भी आशीर्वाद लिया।

दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरिजी पर विशेष आवरण का विमोचन

अजमेर 20 जुलाई। प्रधान डाकघर में मंगलवार को श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छाचार्य प्रथम दादागुरु जिनदत्तसूरिजी म.सा. पर विशेष आवरण का विमोचन किया गया। अजमेर डाक मंडल के प्रवर अधीक्षक आई.एल. सांखला ने बताया कि अजमेर प्रधान डाकघर में जैन समाज के प्रथम दादागुरु जिनदत्तसूरिजी म.सा. के जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में एक विशेष आवरण जारी किया गया, जिसका विमोचन अजमेर परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल कर्नल सुशील कुमार ने किया। इस विशेष आवरण के विमोचन अवसर पर डाक विभाग के अधिकारियों के साथ अजयमेरु फिलाटैलिक सोसाइटी अजमेर के अध्यक्ष सूर्यप्रकाश कटारिया, निर्मल कोठारी, हिमांशु बांठिया, सुनील कोठारी व अन्य नागरिक उपस्थित रहे।

अहमदाबाद में चातुर्मास प्रवेश

अहमदाबाद 22 जुलाई। शहर के शाहीबाग में नवरंगपुरा दादा साहेब के पगला ट्रस्ट के तत्वावधान में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूज्या प्रखर व्याख्यात्री साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्यायें पूज्या साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-11 का अहमदाबाद नगर में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश धूमधाम के साथ हुआ।

शोभायात्रा सुबह 9 बजे तेरापंथ भवन से गाजे-बाजे के साथ रथ, सिर पर मंगल कलश धारण किए हुए महिला मंडल एवं बालिका मंडल, जैन ध्वज लिए पाठशाला के बच्चे, पुरुष वर्ग एवं महिलाओं के साथ रवाना हुआ। प्रवेश तेरापंथ भवन से होते हुए जय प्रेम मंदिर, घासीराम भवन से होते हुए खरतरगच्छ उपाश्रय शाहीबाग प्रांगण में पहुंच धर्म सभा में परिवर्तित हुआ, जहां पर सभी वडील एवं गुरुभक्त द्वारा गुरुवर्याश्री को गुरु वंदन किया। केएमपी, पार्श्व महिला मंडल, सुलोचना मंडल, बालिका मंडल द्वारा स्वर लहरियों में स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। गुरुभक्तों ने अपने विचार प्रकट किए। ट्रस्ट द्वारा बाहर से पधारे मेहमानों का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

पूज्य साध्वीजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए सभी श्रावक को धर्म, तप-आराधना में जुड़ने का आह्वान किया। साध्वीजी ने कहा कि हमारा यह अहोभाग्य है कि हमें यह जिनशासन मिला है हमें इस शासन की सेवा, धर्म आराधना करना हमारा परम कर्तव्य है इसी के साथ युवाओं को इस धर्म आराधना में जुड़ने पर ज्यादा जोर दिया। इस कार्यक्रम में बेंगलुरु, पाली, गांधीधाम, ब्यावर, बीकानेर, मुंबई, धोरीमना, सांचौर, बाड़मेर, चौहटन, दिल्ली आदि कई क्षेत्रों से गुरु भक्त पधारे।

चेन्नई में चातुर्मास प्रवेश

चेन्नई 18 जुलाई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती पू. सज्जनमणि प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्यायें पूज्या साध्वी श्रद्धान्विताश्रीजी म.सा. साध्वी शुक्लप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा का चातुर्मास प्रवेश चंद्रप्रभ स्वामी जिनालय चूले जैन संघ चेन्नई में ता. 18 जुलाई को हुआ। -ललित बरडिया

आदिनाथ जैन ट्रस्ट चैन्नई का नया कोर्स

चेन्नई 22 जुलाई। आदिनाथ जैन ट्रस्ट, चूलै के तत्वावधान में जारी आदिनाथ फिनिशिंग स्कूल का नौवा बैच शुरू हुआ। युवा पीढ़ी के हित में चलाया जाने वाला यह कोर्स दस दिनों तक चलेगा। युवा पीढ़ी को आगे चल कर इससे बहुत लाभ होगा। फिनिशिंग स्कूल की निर्माता डॉ. निर्मलाजी जैन ने कहा इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य लड़कियों को संस्कारित बनाना हैं। इस फिनिशिंग स्कूल के कोर्स में लड़कियों को पर्सनालिटी डेवलपमेंट, रिलेशनशिप, जैन कुकिंग, मेक-अप, बेकिंग, गिफ्ट पैकिंग आदि अनेक कलायें सिखाई जाती हैं। इस फिनिशिंग स्कूल के माध्यम से उनके जीवन में अपूर्व परिवर्तन आएगा।

सूरत-पाल में कुशल वाटिका में चातुर्मास मंगल प्रवेश

सूरत 20 जुलाई। पू. खतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. बहिन म. साध्वीजी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा की शिष्या पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. एवं पू. साध्वी श्री डॉ विज्ञांजनाश्रीजी म. ठाणा २ का मंगल प्रवेश वेस्टर्न शिखरजी से होते हुए सोमचिंतामणि, जिनकुशलसूरीश्वरजी सर्कल, शंखेश्वर हाईट्स से होते हुए जनमेदिनी के साथ में श्री कुशल कांति खरतरगच्छ जैन संघ कुशल वाटिका सोसायटी के उपाश्रय में बाजते गाजते भव्य प्रवेश हुआ।

प्रवेश के पुनित अवसर पर श्री बाडमेर जैन संघ एवं साध्वीजी भगवंतों के संसारिक परिवार एवं श्रीसंघों से गणमान्य गुरुभक्त हाजिर रहे। सर्व मंगलकारी चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर साध्वीजी भगवंतों ने कहा कि चातुर्मास आत्म जागृति का सुअवसर है। सभी को जप, तप, प्रवचन में जुड़ना है।

–श्री कुशल कांति खरतरगच्छ जैन संघ

गुन्टुर नगर में चातुर्मास का ठाट

पू. खतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं सुप्रसिद्ध व्यख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्यायें पूजनीया साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म.सा., पू. सा. शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का चातुर्मास गुन्टुर में धूमधाम से चल रहा है।

दि. 25-7-2021 को अठारह पापस्थानक की संवेदना मोहनजी और मनोजजी बंधु बेलडी द्वारा सुन्दर प्रस्तुति की गई। दि. 1-08-2021 को पूणीया श्रावक की सामायिक पर नाट्य रूपान्तण का स्टेज कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें श्रेणिक महाराजा घीसुलालजी अंबानी और पूणीया श्रावक विनोदजी लूणीया ने शानदार भूमिका निभाई और मण्डल के सदस्यों ने भी अपनी सुन्दर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का निर्देशन रमेशजी पोरवाल और हेमा बहिन ने किया। जैन युवा संगठन गुन्टुर द्वारा मधुर संगीत से संजोया।

–राजेश एम. बाफना

क्षेत्रीय सभा जैसलमेर के ट्रस्टी पद के चुनाव परिणाम घोषित

जैसलमेर 1 अगस्त। जैन ट्रस्ट की क्षेत्रीय सभा जैसलमेर से 3 ट्रस्टी पद के चुनाव संपन्न हुए। 1 अगस्त को प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक महावीर भवन में मतदान की प्रक्रिया चली। जैसलमेर, जोधपुर, मकराना एवं बीकानेर से मतदाताओं ने आकर मतदान किया। प्रत्येक मतदाता को अधिकतम तीन उम्मीदवारों को मतदान का अधिकार था। चुनाव प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद निर्वाचन अधिकारी विजयसिंह जैन द्वारा मतपत्रों की गणना करवा कर परिणाम घोषित किया गया, जिसमें नवीन राखेचा, अर्जुनसिंह भंसाली एवं दीपक कुमार चौपड़ा ने जीत हासिल की।

जैन ट्रस्ट जैसलमेर के अध्यक्ष महेन्द्रसिंह भंसाली ने चुनाव प्रक्रिया की सराहना करते हुए कहा कि विगत कई वर्षो से निर्वाचन अधिकारी द्वारा सदैव निर्विवाद प्रक्रिया संपन्न करवायी है। सभापति महेन्द्रभाई बापना ने शांतिपूर्वक तरीके से चुनाव प्रक्रिया के लिए सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया।

हुब्बली में हुआ केएमपी का गठन

हुब्बल्ली 21 जुलाई। कर्नाटक राज्य के हुब्बल्ली में दादावाड़ी में अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद का गठन हुआ। गठन में जिनकुशल महिला मंडल का अनुकरणीय योगदान रहा।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से रंजन माण्डोत, मधु बाफना, सुशीला बाफना, ज्योति श्रीश्रीमाल ने सुंदर स्वर में गाकर की। तत्पश्चात जिनकुशल महिला मंडल की अध्यक्षा लक्ष्मी कांकरिया ने कार्यक्रम के अतिथि दादावाड़ी अध्यक्ष रमेश बाफना, कार्यदर्शी पुखराज कवाड़, उपाध्यक्ष बाबूलाल संकलेचा, कोषाध्यक्ष मोहनलाल कांकरिया, ट्रस्टी प्रकाश छाजेड़, अशोक छाजेड़ तथा खरतरगच्छ युवा परिषद हुब्बल्ली अध्यक्ष प्रकाश माण्डोत, जिनकुशल युवा मंच के अध्यक्ष मनोज चौपड़ा एवं जिनकुशल महिला मंडल की उपाध्यक्ष कमला श्रीश्रीमाल झोटा को आमंत्रित किया। सभी अतिथियों का स्वागत सुरेखा बाफना ने किया। तथा परिषद के गठन की उपयोगिता का विवरण तारा शाह ने दिया।

कार्यक्रम के अतिथि रमेश बाफना ने कहा कि आज जो नूतन संस्था का गठन हो रहा है उससे अखिल भारतीय स्तर पर एक दूसरे से संपर्क सरल होगा। पुखराज कवाड़ ने कहा कि किसी समाजसेवी संस्था से जुड़कर हम अपनी स्वयं की पहचान बनाते हुए समाज तथा मानवसेवा में अमूल्य योगदान दे सकते है।

खरतरगच्छ महिला परिषद के बेनर का उदघाटन कर हर सदस्य ने अपना परिचय दिया। परिषद के अध्यक्ष पद पर पुष्पा बाफना, उपाध्यक्ष कांता छाजेड़ तथा कार्यदर्शी पद पर मंजू ओस्तवाल मनोनीत की गई। रूपा ओस्तवाल, ज्योति श्रीश्रीमाल, तारा शाह, मंजू यू. ओस्तवाल ने तिलक माला शाल द्वारा नूतन पदाधिकारियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर चंचल मेहता, किरण कवाड़, रेखा सोलंकी, लीलाबेन मांडोत, विनीता शाह, माला लुंकड़, अनिता भोजानी, मधु बागरेचा आदि सदस्य उपस्थित थे। अंत में रेखा कांकरिया ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के बाद भोजन का लाभ जिनकुशल महिला मंडल ने लिया।

भरत रांका केयुप बेंगलूरु के अध्यक्ष बने

बेंगलूरु 24 जुलाई। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बेंगलूरु शाखा की कार्यकारिणी समिति द्वारा शाखा के अध्यक्ष पद पर भरत कुमार रांका को नियुक्त किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष शशी कुमार चौपडा के निधन से रिक्त हुई सीट पर नियुक्त किया गया। पूर्व अध्यक्ष ललित डाकलिया, ललित रांका ने भरत रांका के नाम को अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित किया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष अरुण भंसाली, मंत्री कल्पेश लुंकड, कोषाध्यक्ष विकास खटोड़, सहमंत्री हेमन्त गुलेच्छा, गौतम कोठारी, मनीष मेहता, नीलेश मेहता, नीतेश बोहरा, तेजस छाजेड़, गौरव संकलेचा, तोफराज, विकास गुलेच्छा, विनोद चौपडा आदि सदस्य उपस्थित थे।

बाड़मेर में केयुप वर्षीतप आराधना समिति द्वारा तपस्वी अभिनन्दन

बाड़मेर 13 जुलाई। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन व आशीर्वाद से केयुप वर्षीतप आराधना समिति बाड़मेर द्वारा गत वर्ष से आयोजित सामुहिक वर्षीतप की आराधना की पुर्णाहुति के बाद 13 जुलाई को अभिनन्दन समारोह कुशल वाटिका में आयोजित किया गया

केयुप वर्षीतप आराधना समिति द्वारा स्थानीय जैन छात्रावास कल्याणपुरा में 16 मार्च 2020 को वर्षीतप बियासना का शुभारम्भ पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. व पू. प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में किया गया था, जिसकी पुर्णाहुति अक्षय तृतीया को इक्षुरस के पारणे के साथ सम्पन्न हुई।

सम्मान समारोह में तेरापंथ सम्प्रदाय से मुनि श्री स्वस्तिक कुमार व खरतरगच्छ से साध्वी श्री मृगावतीश्रीजी म.सा., अंचलगच्छ से साध्वी समयगुणाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा व नगर परिषद सभापति दिलीप माली, कुशल वाटिका अध्यक्ष भंवरलालजी छाजेड़ के मुख्य अतिथि में वर्षीतप आराधकों का अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया।

सामुहिक गुरुवन्दन व अतिथियों द्वारा दीप प्रवज्जलन, वर्षीतप आराधक जगदीश पड़ाईया व केएमपी सदस्य सोनू वडेरा ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में जय जिनेन्द्र के लाभार्थी भंवरलाल विरधीचन्द छाजेड़ परिवार व श्रेयांस कुमार के लाभार्थी मांगीलाल आसुलाल मालू परिवार सूरत व वर्षीतप के मुख्य लाभार्थी बाबूलाल चिन्तामणदास मालू परिवार गोईलार व बहुमान के लाभार्थी सहित सभी वर्षीतप आराधकों का तिलक, माला, श्रीफल, साफा, चुनड़ी व मोमोन्टों देकर लाभार्थी परिवारों द्वारा अभिनन्दन किया गया। केयुप वर्षीतप आराधना समिति ने इक्षुरस व रजत कलश भेंट कर उनकी तपस्या की भूरी भूरी अनुमोदना की। कार्यक्रम के दौरान खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा. द्वारा प्राप्त आशीर्वाद संदेश का वाचन किया गया। सभा में अनेक गणमान्य लोगों के साथ गुरुभक्त, केयुप सदस्य, केएमपी सदस्य, केबीपी सदस्य उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में भुरचंद बोहरा, मुकेश बोहरा अमन, मांगीलाल संखलेचा सहित कई मंडलों ने सेवाएं दी। कार्यक्रम का सफल संचालन केवलचन्द छाजेड़ ने किया।

–कपिल मालू बाड़मेर लाइव

हार्दिक श्रद्धांजलि

卐 तपस्वीरत्ना प्रेमाबाई झाबक का समाधि मरण

हैद्राबाद 16 जुलाई। सुश्राविका तपस्वी रत्ना जीवदया प्रेमी श्रीमती प्रेमा बाई झाबक ने नवकार मंत्र स्मरण करते संथारा सहित साधु-साध्वी जी के सानिध्य में 16 जुलाई 2021 को नश्वर शरीर को छोड़ दिया। प्रेमाबाई संपूर्ण भारत वर्ष में अपने वैयावच्च के कार्य के लिए जानी जाती थी। जैन जगत् के सभी साधु-साध्वी जी भगवंतों की सेवा करने हमेशा तत्पर रहती थी।

आप तप करने में भी अग्रणी थी। आपने अपने जीवन में 10 वर्षीतप तथा 70, 50, 36 उपवास, 4 मासखमण, 8 उपवास 21बार आदि तपस्या कर चुकी हैं। बीस स्थानक ओली पूर्ण, अक्षय निधि तप, अष्टापद तप, मोक्षतप, समोसरण तप, मौन ग्यारस तप आदि कई अन्य तप भी किए है।

श्रीमती प्रेमाबाईजी बचपन से ही धर्म परायण रही है। प्रेमाबाईजी ने जैन धर्म के साहित्य का अनूठा एवं विस्तृत संग्रह किया है। जिसमें सभी पंथों का साहित्य है। पांडुलिपियाँ हैं। उनका घर वैयावच्च के सामान एवं साहित्य से भरा दिखायी देता है। 33 वर्ष पूर्व उन्होंने कत्लखाने के विरोध में अपनी चरण पादुकाएँ त्याग दी थीं। उस त्याग को अंत तक निभाया। वे 118 बार दादावाड़ी का पदयात्रा कर चुकी हैं और दो बार कुलपाकजी मंदिर की। लगातार 16 वर्षों से दीपावली अपने घर में नहीं मना कर भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक भूमि पावापुरी पर मनाती थी। इनके पति वजीरचंदजी झाबक भी धर्मपरायण व्यक्ति हैं जो चारकमान जैन मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर मेडचल एवं अनुभव स्मारक-पाली के ट्रस्टी रहे हैं। शरीर की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सभी धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेते थे। आधुनिक युग में प्रेमाबाईजी का धर्म के प्रति लगाव सभी के लिए अनुकरणीय है।

卐 श्री शांतिलालजी मरडिया

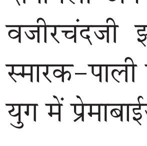

मुंबई 13 जुलाई। मुंबई केयुप के अध्यक्ष श्री शांतिलालजी मरडिया (चितलवाना निवासी) का अचानक स्वर्गवास हो गया। वे जिनशासन एवं गच्छ के प्रति विशेष श्रद्धावान थे। शासन के विविध प्रकल्पों में हमेशा अग्रणी रहते थे। उनके स्वर्गवास से बडी क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर को जुआ खेलने की आदत पड गई थी। एक दिन वह 50 हजार रुपये घर से लेकर रवाना हुआ।

जुआ खेलने बैठा। भाग्य साथ नहीं दे रहा था। वह लगातार हार रहा था। हारी हुई राशि को जीत कर वापस प्राप्त करने की कामना से वह खेलता ही गया।

उसकी पत्नी ने बार-बार मना किया। बस! बहुत हो गया। अब छोड़ दो। जितने गये, उतने गये, जो बचे वो अपने। यहाँ से उठो।

पर जटाशंकर नहीं माना। जीतने की कामना से लगातार खेलता गया और लगातार हारता गया।

आखिर उसके पास मात्र दो रुपये बचे।

उसने अपनी पत्नी से पूछा- केवल दो रुपये बचे हैं। तूं कहे तो खेल लेता हूँ।

पत्नी बहुत परेशान थी। वह कब से मना कर रही थी। अब जब मात्र दो रुपये बचे हैं तो मुझे पूछ रहा है।

पत्नी ने झल्लाकर कहा- जैसी तेरी इच्छा!

उसने खेलना प्रारंभ किया। भाग्य ने पूरा साथ दिया। वह लगातार जीतता जा रहा था। जीती हुई राशि करोड़ तक पहुँच गई। इसके साथ उसका लोभ बढता गया।

उसने सोचा- आज अभी मेरी किस्मत साथ दे रही है। आज तो यहाँ सारी रकम जीत लेनी है।

उसे यह पता नहीं था कि भाग्य हर समय साथ नहीं देता।

वह खेलते-खेलते हारने लगा। हारता चला गया।

सुबह होने पर वह उस अड्डे से बाहर निकला। उसके पास फूटी कौडी भी नहीं बची थी।

पत्नी ने पूछा- क्या हुआ!

जटाशंकर ने कुछ सोचकर प्रसन्न होकर जवाब दिया- बस! सिर्फ दो रुपये हार गया।

हारा तो करोडों था। पर वह मात्र दो रुपये का कह कर वह अपने आपको बचा रहा था। वह ऐसा दिखा रहा था- जैसे कुछ हारा नहीं है।

हम भी प्रतिपल करोडों के पल हार रहे हैं। फिर भी प्रसन्न रहते हैं ऐसा अनुभव कर कि हम कुछ भी नहीं हारे हैं।

जीवनदीप उज्जैन के बढ़ते कदम

उज्जैन 15 जुलाई। पू. गच्छा. आचार्य श्री दौलतसागरसूरिजी म. शताब्दी वर्ष निमित्त पू. आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी म. की प्रेरणा से दि. 11 जुलाई के दिन गुरुभक्त श्री विपुल भाई शाह (मुम्बई) ने जीवनदीप के प्रोजेक्ट (स्मार्ट डायग्नोस्टिक सेंटर व डायलिसिस यूनिट) के लिये प्रथम निर्माण लाभार्थी के रूप में अपनी स्वीकृति प्रदान की। साथ ही पू. आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी म. ने सम्पूर्ण प्रोजेक्ट को अपने सानिध्य में लेते हुए पूर्ण करने की सहमति प्रदान की।

पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की प्रेरणा से श्री पूनमचन्दजी अशोक कुमारजी कोठारी ने जीवनदीप परिवार के प्रोजेक्ट को मूर्त रूप देने के लिये आधा बीघा जमीन दान देने की स्वीकृति प्रदान की। दोनों लाभार्थियों की अनुमोदना है।

खापर में प्रवेश

अहमदाबाद में प्रवेश

गुण्टूर में समारोह

सूरत पाल में प्रवेश

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

धोरीमन्ना में पू. आचार्यश्री जिनमनोज्ञसूरिजी म.सा. आदि का प्रवेश

बड़ौदा प्रवेश

वड़ोदरा में पू. स्थविर श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं
पू. गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. आदि का प्रवेश

सूरत प्रवेश

सूरत में पू. गणिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि का प्रवेश

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक
डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड,
जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408